International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2023; 3(1): 165-168
www.educationjournal.info
Received: 09-02-2023
Accepted: 17-03-2023

प्रदीप कुमार मिश्रा
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. रंजना तिवारी
विभागाध्यक्ष शिक्षा, श्रीयुत्त स्नातकोत्तर कालेज, गंगेव, जिला रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
प्रदीप कुमार मिश्रा
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

प्रदीप कुमार मिश्रा एवं डॉ. रंजना तिवारी

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। शोध क्षेत्र के प्रत्येक विकासखण्ड से न्यादर्श के रूप में चयनित सतना जिले के सभी विकासखण्डों से 6–6 विद्यालय कुल 48 विद्यालयों, प्रत्येक विद्यालयों से 10–10 छात्र–छात्राएँ कुल 800 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से अधिगम स्तर ज्ञात करने के लिए किया गया है। शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है। शोध क्षेत्र के राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

कूट शब्दः सतना जिला, माध्यमिक स्तर, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020, प्रभाव, विद्यार्थी, अधिगम स्तर.

1. प्रस्तावना
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 आधुनिकीकरण पर केंद्रित रही। जिसमें शिक्षा के आधुनिकीकरण और बुनियादी शिक्षा मुहैया कराने पर जोर दिया गया। इस शिक्षा नीति में प्राथमिक स्तर पर बच्चों के स्कूल छोड़ने पर रोक लगाने पर जोर दिया गया और कहा गया कि देश में गैर औपचारिक शिक्षा के नेटवर्क को पेश किया जाना चाहिए। साथ ही व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा में उनके लिए विशेष प्रावधान किए जाएंगे।

शिक्षा क्षेत्र में व्यापक बदलावों के लिए केंद्र सरकार ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को मंजूरी दे दी है। लगभग तीन दशक के बाद नई शिक्षा नीति को मंजूरी दी गई है। इससे पूर्व 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाई गई थी और 1992 में इसमें संशोधन किया गया था। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति से पूर्व देश में मुख्य रूप से दो ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति आई थी। स्वतंत्रता के बाद पहली बार 1968 में पहली शिक्षा नीति की घोषणा की गई। यह कोठारी कमीशन (1964–1986) की सिफारिशों पर आधारित थी। इस नीति को तत्कालीन इंदिरा गांधी सरकार ने लागू किया था। इसका मुख्य उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना और देश के सभी नागरिकों को शिक्षा मुहैया कराना था। बाद के वर्षों में देश की शिक्षा नीति की समीक्षा की गई। वहीं देश की दूसरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति मई 1986 में मंजूर की गई। जिसे तत्कालीन राजीव गांधी सरकार लेकर आई थी। इसमें कम्प्यूटर और पुस्तकालय जैसे संसाधनों को जुटाने पर जोर दिया गया। वहीं इस नीति को 1992 में पीवी नरसिंह राव ने संशोधित किया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को उद्देश्य शिक्षा की पहुँच, समानता, गुणवत्ता, वहनीय शिक्षा और उत्तरदायित्वों जैसे मुद्दों पर विशेष ध्यान देना है। छात्रों को जरूरी कौशल एवं ज्ञान से लैस करना और विज्ञान, टेक्नोलाजी, अकादमिक क्षेत्र और इन्डस्ट्री में कुशल लोगों की कमी को दूर करते हुए देश को ज्ञान आधारित सुपर पावर के रूप स्थापित करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020), जिसे 29 जुलाई 2020 को भारत के केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित किया गया था, भारत की नई शिक्षा प्रणाली के दृष्टिकोण को रेखा ंकित करती है। नई शिक्षा नीति 2020 ने पिछली राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, की जगह ले ली है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्राथमिक शिक्षा से उच्च शिक्षा के साथ–साथ ग्रामीण और शहरी भारत दोनों में व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए एक व्यापक रूपरेखा तैयार करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य 2021 तक भारत की शिक्षा प्रणाली को बदलना है और यह नीति 2020 भारत को बदलने में सीधे प्रकार से योगदान प्रदान करती है और भारतीय लोकाचार में निहित शिक्षा प्रणाली को देखती है। इसका उद्देश्य धर्म, लिंग, जाति या पंथ के किसी भी भेदभाव के बिना, सभी को बढ़ने और विकसित होने के लिए एक समान मंच प्रदान करना और सभी को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करके मौजूदा जीवंत ज्ञान समाज को बनाए रखना और उसकी देखभाल करना है। यह भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाने की दिशा में भी एक कदम है। इस नीति में यह परिकल्पना की गई है कि हमारे संस्थानों के समान

पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र को, छात्रों में मौलिक कर्तव्यों के प्रति सम्मान की भावना पैदा करनी चाहिए और संवैधानिक मूल्यों, अपने देश और एक बदलती दुनिया के साथ एक संबंध पैदा करना चाहिए। इस नीति का दृष्टिकोण शिक्षार्थियों के बीच ज्ञान, कौशल, आत्मविश्वास, बुद्धि और कर्म के साथ न केवल विचार बल्कि मूल्यों और दृष्टिकोणों में भी विकास करना है, जो मानव अधिकारों, सतत विकास और जीवन का समर्थन करते हैं और वैश्विक कल्याण के लिए एक जिम्मेदार प्रतिबद्धता, जिससे वास्तव में एक वैश्विक नागरिक प्रतिबिंबित होता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल सतना जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 का क्रियान्वयन का आकंलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य सरकार माध्यमिक शिक्षा स्तर पर योजना के क्रियान्वयन को प्रभावी ढंग से विकसित करने में समर्थ हो सकता है। नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षा रटने वाले विषयों, समय सीमा को पूरा करने और अंक प्राप्त करने से कहीं अधिक है, लेकिन शिक्षा का वास्तविक अर्थ ज्ञान, कौशल, मूल्यों को प्राप्त करना और उस क्षेत्र में निरंतर कार्य करना और प्रगति करना है, जिसमें व्यक्ति अपनी रुचि खोज की करता है। वास्तविक तथ्यों पर आधारित इस अध्ययन के निष्कर्ष समाज के हित में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। इस अध्ययन क्षेत्र में पूर्व अनुसंधान की कमी के कारण यह शोध मॉडल इस अध्ययन के लिए प्रस्तावित है। शोधकर्ता इस वर्तमान अध्ययन के सभी पहलुओं को समझाने का प्रयास करेगा।

3. उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है:–

1. शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शोध क्षेत्र के राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ:

परिकल्पना शोध समस्या एवं समस्या समाधान के बीच की कड़ी है। परिकल्पनाा से तात्पर्य है कि किसी भी समस्या के हल के बारे में पूर्वानुमान लगाना। परिकल्पना एक ऐसा पूर्व विचार है, जो किसी सामान्य के संबंध में बना लिया जाता है और जिसकी सार्थकता की परीक्षा के लिए आवश्यक तथ्यों को एकत्रित किया जाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् है:–

1. शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. शोध क्षेत्र के राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला सतना है। इसके अन्तर्गत 8 विकासखण्ड – सतना, (सुहावल), चित्रकूट (मझगवाँ), रामपुर बघेलान, नागौद, ऊचेहरा, अमरपाटन, रामनगर एवं मैंहर हैं। अतः जिला अन्तर्गत माध्यमिक स्तर के विद्यालय इस अध्ययन सम्मिलित किए गए है।

6. शोध विधियाँ:

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से प्रस्तुत शोध कार्य मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक (वर्णनात्मक) होगा। शोध अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 सर्वेक्षण विधि – प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

6.2 सांख्यिकी विधि – प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण –

सूचना या आंकड़े प्राप्त करने हेतु स्वनिर्मित अधिगम परीक्षण पत्रक का प्रयोग किया गया है।

7. न्यादर्श चयन :

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। न्यादर्श के रूप में चयनित सतना जिले के सभी विकासखण्डों से 6–6 विद्यालय कुल 48 विद्यालयों, प्रत्येक विद्यालय से 10–10 छात्र–छात्राएँ कुल 800 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से अधिगम स्तर ज्ञात करने हेतु किया किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989)[1], कुशवाहा, उमाशंकर एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमार (2021)[2], कपिल, एच.के. (1996)[3], खुल्लर, के.के. (1988)[4], गहरवार मिथलेस सिंह (2005)[5], चतुर्वेदी, आर.सी. एवं मिश्रा, शिवानी (2007)[6], सिंह, बिरेन्द्र एवं देवी कुकन (2022)[7], पाठक, सच्चिदानंद (2021)[8], साईद, असलम एवं शुक्ला, प्रतिमा (2022)[9]।

9. शोध क्षेत्र का परिचय :

सतना जिला 23.58°–25.12° उत्तरी अक्षांश 80.12 – 81.23° पूर्वी देशान्तर पर स्थिति है। जिले समुद्र तल से ऊँचाई 317 मी. है, नागौद 626 मी., अमरपाटन और मैहर 537.06 मीटर है। जिले

का भौगोलिक क्षेत्रफल 7424 वर्ग कि.मी. है जो प्रदेश के क्षेत्रफल का 1.78 प्रतिशत है। सतना मध्य रेल्वे के इलाहाबाद और कटनी जंक्शन के बीच एक प्रमुख रेल्वे स्टेशन एवं व्यापारिक, औद्योगिक नगर है। जिले में एक नगर निगम (सतना), एक नगरपालिका (मैहर) के अतिरिक्त 9 नगर पंचायते क्रमषः नागौद, अमरपाटन, रामपुर बघेलान, कोठी, जैतवारा, कोटर, विरसिंहपुर, उचेहरा एवं चित्रकूट हैं।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्याः

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1 : शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

सारणी क्रमांक 1: शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		ग्रामीण	शहरी
समूह की संख्या (N)		400	400
मध्यमान (M)		53.05	57.40
मानक विचलन (SD)		17.01	16.05
क्रान्तिक निष्पत्ति ('t')		3.72	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

df = $(N_1-1) + (N_2-1)$
df = (400-1) + (400-1) = 399+399 = 798

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 मे न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 53.05 है तथा मानक विचलन 17.01 है और शहरी क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 57.40 है तथा मानक विचलन 16.05 है।

798 कि पर सार्थकता के लिए श्जश का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.62 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.98 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान 3.72 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से अधिक है। अतः शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना क्र. 1 निरसित होती है।

परिकल्पना क्र. 2: "शोध क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

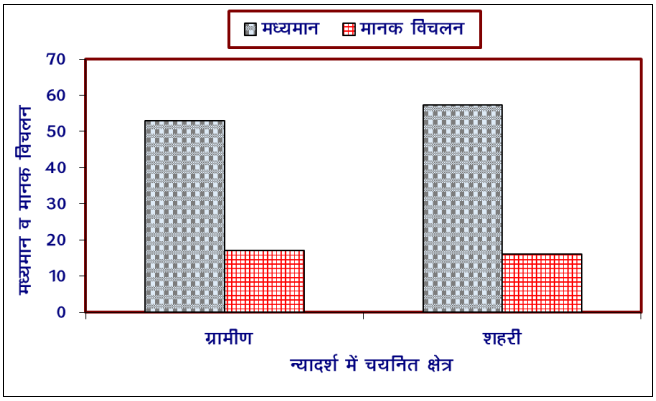

आरेख क्र. 1: शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

सारणी क्रमांक 1: शोध क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		छात्र	छात्राएँ
समूह की संख्या (N)		400	400
मध्यमान (M)		55.70	55.23
मानक विचलन (SD)		16.43	15.75
क्रान्तिक निष्पत्ति ('t')		0.42	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	

df = $(N_1-1) + (N_2-1)$
df = (400-1) + (400-1) = 399+399 = 798

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 मे न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 55.70 है तथा मानक विचलन 16. 43 है और छात्राओं के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 55.23 है तथा मानक विचलन 15. 75 है।

798 df पर सार्थकता के लिए श्जश का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.62 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.98 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त श्जश का मान 0.42 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र के राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना क्र. 2 सत्यापित होती है।

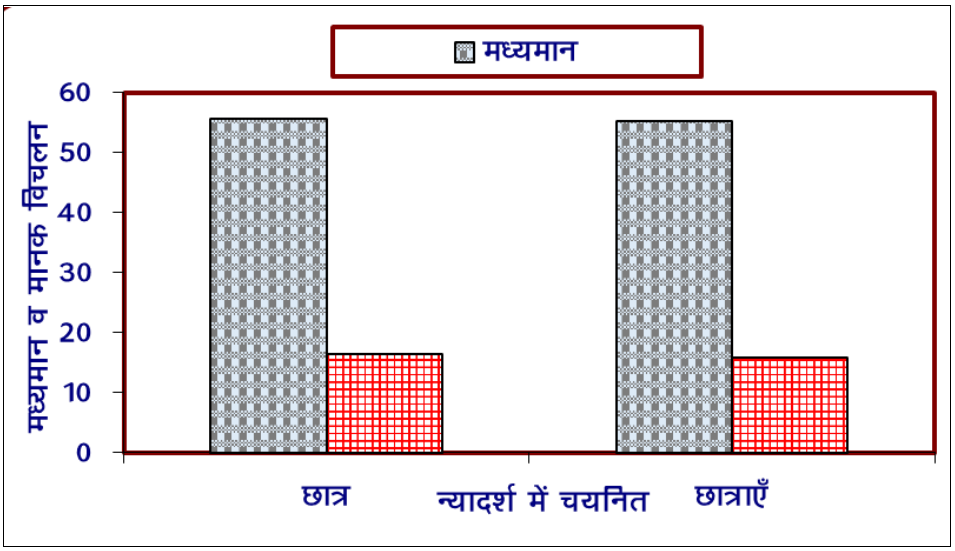

आरेख क्र. 2: शोध क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

निष्कर्ष :

शोध क्षेत्र के ग्रामीण माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 53.05 है तथा मानक विचलन 17.01 है और शहरी माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 57.40 है तथा मानक विचलन 16.05 है।

शोध क्षेत्र के राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 55.70 है तथा मानक विचलन 16.43 है और छात्राओं के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 55.23 है तथा मानक विचलन 15.75 है।

संदर्भ

1. अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989) : मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन व मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
2. कुशवाहा, उमाशंकर एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमारः सतना जिले में किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं में मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Applied Research; 2021;7(1):400-403.
3. कपिल, एच.के. (1996): सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
4. खुल्लर, के.के. (1988): राष्ट्रीय शिक्षा नीति, नई दिल्ली विज्ञापन एवं दृष्य प्रसार निर्देशालय.
5. गहरवार मिथलेस सिंह (2005): रीवा जिले में राजीव गांधी शिक्षा मिशन के शैक्षिक नवाचारो का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभावशीलता का समीक्षात्मक अध्ययनः अप्रकाशित शोध ग्रंथ शिक्षा, अ.प्र.सिं.वि.वि.रीवा.
6. चतुर्वेदी, आर.सी. एवं मिश्रा, शिवानी (2007): वर्तमान भारतीय शिक्षा, समाज और भ्रष्टाचार, Research Journal of Social and Life Sciences. 2007;2(1):195–204.
7. सिंह, बिरेन्द्र एवं देवी कुकन (2022) : उच्च शिक्षा के विशेष संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की एक महत्वपूर्ण अंतदृ Zf"V, International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR), 2020;9(1):17-20.
8. पाठक, सच्चिदानंद (2021): राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के महत्वपूर्ण प्रावधानः एक अध्ययन, Multidisciplinary Academic Research. 2021;18(6):216-220.
9. साईद, असलम एवं शुक्ला, प्रतिमा (2022): राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की चुनौतियों और अवसरों पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT). 2022;2(1):127-131.